International Referred Research Journal, October, 2011. ISSN- 0974-2832, RNI-RAJBIL 2009/29954;VoL.III *ISSUE-33

शोध पत्र- शिक्षा

जयशंकर प्रसाद की कहानी नीरा मे मनोवैज्ञानिक कारक थकान का अध्ययन

* प्रो. डॉ. असरारुल गनी ** कीर्ति दीक्षित *** आकांक्षा द्विवेदी

October, 2011

* प्राध्यापक शिक्षा संकाय एन. ई. एस. शिक्षा महाविद्यालय, अध्यक्ष सरस्वती एजुकेशन सोसायटी होशंगाबाद
-* एम. एड. शोधार्थी, एन. ई. एस. शिक्षा महाविद्यालय, होशंगाबाद

प्रसाद जी की कहानी नीरा विसंगतियों को स्पष्ट करनें के साथ – साथ दरिद्रता एवं दयनीय अवस्था का भी प्रवाह पूर्ण चित्रण है। कहानी की भाषा चित्रमयता निर्मित कर देती है। कहानी मनोवैज्ञानिक कारकों का भी प्रस्तुतिकरण किया गया है। प्रस्तुत शोध–पत्र जयशंकर प्रसाद जी की कहानी 'नीरा' में शारीरिक,मानसिक एवं विशेष थकान की स्थिति को स्पष्ट करता है। शोध–पत्र कहानी के मनोवैज्ञानिक कारकों एवं उद्देश्य को आधिक स्पष्ट करनें में सहायक होगा।

प्रस्तावना:–

कहानी के माध्यम से लेखक अपनी परिकल्पनाओं को व्यक्त करता है। परन्तु साथ ही साथ वह कहानी के माध्यम से मानव चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्माण हेतु शिक्षा अवश्य देता है। प्रेमचंद्र युगीन कहानियों में जयशंकर प्रसाद प्रमुख है। प्रसादजी ने हिन्दी को नई गति, शिल्प एवं शक्ति प्रदान की है। **'प्रसाद जी ने लगभग 70 कहानियाँ लिखी जो 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'आंधी, तथा 'इन्द्रजाल में संकलित है'।**

'नीरा' कहानी अभाव और आस्था के मध्य संघर्ष की कहानी है। विषम परिस्थितियों ने उसे (वृद्ध) को अत्यंत कठोर बना दिया, वह ईश्वर विरोधी है। वह अपने कष्टों के प्रति ईश्वर को उत्तरदायी मानता है। जब कहीं दुआ देने की आवश्यकता पड़ती है तो वह अपना अविश्वास ही व्यक्त करता है। **'अच्छा तो बाबूजी, भगवान यदि कोई हो, तो आपका भला करें।'** 'नीरा' इस अभावग्रस्त बूढ़े की समझदार, शांत, सहनशील एवं मातृहीन बालिका थी, जिसकी माँ कुलसम 'मारिशस' में गोलियों की शिकार हो गई थी। अतीत के कटु अनुभव बूढ़े को अपनी पुत्री 'नीरा' के प्रति चिंतित बनाये हुए है। कहानी के अन्य पात्र अमरनाथ एवं देवनिवास की भेंट मुख्य पात्रों से अनायास ही होती है। बूढ़े की नास्तिकता देवनिवास के मन में जिज्ञासा उत्पन्न करती है। अमरनाथ तर्को के माध्यम से बूढ़ें की नास्तिकता को धिक्कारता है एवं चिढ़ जाता है।

वहीं देवनिवास बूढ़े एवं 'नीरा' से सहानुभूति रखता है। देवनिवास जब दोबारा झोंपड़ी में जाकर बूढ़े की कथा सुनता है तो ज्ञात होता है कि बूढ़ें ने नास्तिकता का आवरण उतारकर वास्तविक सत्य एवं परिस्थिति को स्वीकार लिया है। जो कार्य अमरनाथ के अकाट्य तर्क नहीं कर पायें वह कार्य देवनिवास के स्नेंहपूर्ण व्यक्तित्व एवं सहानुभूति ने कर दिया था। कहानी के अंत में देवनिवास विनीत शब्दों में विवाह का प्रस्ताव रखता है– **"मै नीरा से विवाह करने के लिये प्रस्तुत हूँ यदि तुम्हें......।"**

देवनिवास का यह निस्वार्थ प्रस्ताव बूढ़े के मन में संतोष एवं विश्वास का भाव जाग्रत करता है। उपरोक्त के माध्यम से प्रसादजी मनोवैज्ञानिक कारकों का प्रयोग कर रहे हैं। अतः यह जानना आवश्यक है कि प्रसादजी कौन–कौन से मनोवैज्ञानिक कारकों का प्रयोग 'नीरा' कहानी में कर रहे हैं। इस शोध–पत्र के माध्यम से हम मनोवैज्ञानिक कारक थकान का अध्ययन करेगें।

शोध पत्र की आवश्यकता एवं महत्व:–

कहानीकार का कहानी के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना मुख्य उद्देश्य होता है। जिससें वह अपनें व्यक्तित्व का निखार कर परिस्थितियों से समायोजित हो सकें। प्रसादजी की कहानियाँ अलग–अलग शिक्षा एवं संदेश देती है। कई स्थानों पर यह संदेश प्रत्यक्ष न होकर अप्रत्यक्ष होते है। इन संदेशो की मनोवैज्ञानिकता को जानकर सही रूप में शिक्षक एवं मार्गदर्शक द्वारा प्रयोग किया जाए तो कहानी के मुख्य उद्देश्य को समझा जा सकता है। अतः यह शोध–पत्र विधार्थियों को सिखानें एवं शिक्षा के साथ–साथ नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण होगा।

पदों की व्याख्या:–

जयशंकर प्रसाद छायावाद के आधार स्तम्भ माने जाते है। कहानियों के साथ–साथ गद्य की विधा नाटक में भी एक खण्ड 'प्रसाद युग के नाटक' के नाम से प्रचलित है। प्रेमचंद्र के अनुसार :– **"कहानी एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना कहानीकार का उद्देश्य होता है।"**

नीरा:–

आभावगृस्त बूढ़े की **"नीरा एक गोरी–सी सुंदरी दुबली–पतली करूणा की छाया थी। नीरा बालिका न थी फिर भी दरिद्रता के भीषण हाथों ने उसे दबा दिया था सीधी ऊपर नहीं उठने पाई।"**

मनोविज्ञान:– "मनोविज्ञान व्यक्ति की क्रियाओं का, उसके पर्यावरण के संदर्भ में, वैज्ञानिक अध्ययन है।"
(Psychology is the scientific study of the activities of the individual in relation to the environment)
** - wood worth

शोध का उद्देश्य:–

'नीरा' कहानी में मनोवैज्ञानिक कारक 'थकान' का अध्ययन करना।

परिकल्पना:–

इस कहानी में मनोवैज्ञानिक कारक थकान (शारीरिक, मानसिक एवं विशेष थकान) का उपयोग करेंगें।

सीमांकन:–

जयशंकर प्रसाद की कहानी 'नीरा' कक्षा ग्यारहवीं स्वाति हिन्दी विशिष्ट।

परिकल्पनाओं का पुष्टि करण:–

थकान:–

थकान एक मनोवैज्ञानिक कारक है जो सीखने की प्रवृत्ति में बाधक सिद्ध होता है। थकान का मुख्य कारण है मांसपेशियों में खिचांव होना। फ्रीमेन (Freeman) के अनुसार – **"थकान एक ऐसी अवस्था है। जिसमें शरीर के तंत्र प्रतिक्रिया नहीं करते एवं मन शिथिल हो जाता है।" स्टार्स ने स्पष्ट किया है– "कभी – कभी शरीर के सही स्थिति में होने के बाद भी मनुष्य थकान अनुभव करता है। यह तब होता है जब व्यक्ति की कार्य में रुचि नहीं होती।"** मनोवैज्ञानिक कारक थकान की स्थिति में मनुष्य की कार्य क्षमता में कमी आ जाती है।

औफनर के अनुसारः– ''थकान हमारी शारीरिक रचना में ठीक तरह काम करने की घटी हुई सामर्थ्य होती है इस सामर्थ्य से लगी हुई एक अनुभूति होती है जो थकान है।'' (Fatigue is the reduced capacity of our organism to work properly that capacity is accompained with some feeling also wich is knows as feeling of fatigue.)

'नीरा' कहानी में अनेक स्थानों पर ऐसी भावनात्मक स्थिति निर्मित होती है जो थकान का दृष्टिगत करती है। 'नीरा' कहानी में शारीरिक थकान की अपेक्षाकृत मानसिक एवं विशेष थकान की स्थिति अधिक निर्मित होती है

शारीरिक थकान:–

यह वह अवस्था है जब शरीर में कार्य करने की शक्ति कम रह जाती है। शरीर के विभिन्न अंग शिथिल हो जाते है और व्यक्ति विश्राम करने का इच्छुक हो जाता है।

1.''वृक्ष के नीचे पुआल से ढ़की झोंपड़ी में पड़े हुए अनाहार, सर्दी और रोगो से जीर्ण मुझ अभागे को मेरा ही भ्रम बताकर आप किसी बड़ें भारी सत्य का आविष्कार कर रहे है।''

2.''उसका दम फूलने लगता है खासी आने लगती है।''

3.''बुड्ढ़े का सिर धीरे – धीरे नीचे झुकने लगा।'' प्रथम अवस्था में जब वृद्ध अपने नास्किता के तर्क को सिद्ध नही कर पाता है। अस्वस्थ होने के कारण तर्क– वितर्को से थक जाता है तो वह अपनी दरिद्र स्थिति का वर्णन करता है। द्वितीय अवस्था में अधिक बोलने से थक जाता है । तृतीय अवस्था में वृद्ध तर्को के सामने थक कर सिर नीचा कर लेता है।

मानसिक थकान:–

मनुष्य जब मानसिक कार्य करता है तो एक स्थिति एसी आती है कि मस्तिष्क की नाड़ियों में खिंचाव होने लगाता है और मस्तिष्क की क्षमता कम हो जाती है। यह मानसिक थकान है।

1. 'अपने पिता को बातें करते देखकर वह घवरा उठी थी वह डरती हे कि बूढ़ा न जाने क्या– क्या कह बैठेगा।'

2. 'अब नीरा हताश हो गई थी और उसने बूढ़े को रोकने का प्रयास छोड़ दिया था। वह एक टक बूढ़े का मुंह देख रही थी।'

3.'अब बूढ़ा नीरा की ओर देख रहा था और नीरा की आँखे बूढ़े को आगे न बोलने की शपथ दिला रही थी।'

तीनो स्थितियों में 'नीरा' चाहती है कि उसके पिता अपनी दरिद्रता एवं दुसह परिस्थितियों का वर्णन अन्य लोगों के सामने न करें। जब वह बूढ़े को रोक नही पाती है तो मानसिक थकान का अनुभव करती है।

विशेष थकान:–

कभी–कभी मनुष्य न तो शारीरिक श्रम करता है और न कोई मानसिक कार्य करता है। लेकिन फिर भी उसे शारीरिक एवं मानसिक थकान हो जाती है। इसका मुल कारण अचेतन मन ¼Uncon-scious Mind½ का अधिक क्रियाशील होना होता है। जाग्रत अवस्था में चिंताग्रस्त रहने और निद्रा अवस्था में भयंकर स्वप्न देखने अथवा समस्या समाधन में लगे रहने से मनुष्य शारीरिक एवं मानसिक दोनों थकान अनुभव करता है। 'मैं कुलसम के विचारों की खिल्ली उड़ाता हुआ हंसकर कह देता–तो मेरे तुम्हीं ईश्वर हो, खुदा हो, तुम ही सब कुछ हो। वह मुझे चापलूसी करते हुए देख कर हँस तो देती थी किंतु उसका रोआँ–रोआँ रोने लगता है।' बूढ़े को नीरा की माँ कुलसम को याद करने में शारीरिक एवं मानसिक थकान तो नहीं होती परंतु थकान विशेष की स्थिति निर्मित होती है जो वृद्ध को शिथिल कर देती है।

निष्कर्ष:–

उक्त के माध्यम से ज्ञात होता है कि जयशंकर प्रसादजी की कहानी 'नीरा' में मानसिक थकान, शारीरिक थकान एवं विशेष थकान की स्थिति दृष्टव्य होती है। रचनाकार ने कहानी को मूर्त रूप देने के साथ मनोवैज्ञानिक कारकों का भी यथास्थान प्रयोग किया है। 'नीरा' कहानी में प्रसादजी की भाषा–शैली स्वाभाविक एवं यथार्थ परक है। रचना में मानव–मनोविज्ञान के सूक्ष्म–विश्लेषण वाले चित्र मिलते हैं।

सुझाव:–

जयशंकर प्रसाद की कहानी 'नीरा' में मनोवैज्ञानिक कारक थकान को प्रश्नों के माध्यम से या शिक्षक द्वारा अध्ययन कराया जा सकता है। यह प्रयास कहानी में रूचि को अधिक बढ़ाने में सहायक होगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. भटनागर– शिक्षा मनोविज्ञान प्रथम संस्करण अमरलाल बुक डिपो मेरठ पृष्ठ नं. 3,276 2. रमन बिहारीलाल – शिक्षा मनोविज्ञान द्वितीय संशोधित संस्करण, रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ पृष्ठ नं. 272 3. स्वाति हिन्दी विशिष्ट कक्षा 11वी प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ नं. 35–40 4. स्वाति हिन्दी विशिष्ट कक्षा 12वी प्रकाशन वर्ष 2008 पृष्ठ नं. 07